

भुजंग विजृम्भित पुं. (तत्.) सर्प का आलस्य भाव या चेष्टित आचरण काव्य. छंदःशास्त्र में 26 वर्णों का एक समवर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः दो मगण, तगण, तीन नगण, रगण, सगण और लघु गुरु के योग से 26 वर्ण होते हैं तथा 8-11-7 पर यति होती है।

भुजंग शिशुभृता स्त्री. (तत्.) साँप के बच्चे द्वारा पालित पुत्री।

भुजंग संगता स्त्री. (तत्.) काव्य. एक समवर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः सगण, जगण और रगण के योग से 9 वर्ण होते हैं।

भुजंगा पुं. (तद्.) काले रंग का बुलबुल के आकार का दुबला, पतला निडर पक्षी, जिसकी पूँछ लंबी और बीच से फटी होती है टि. यह पक्षी प्रायः खुले मैदानों, खेतों, पेड़ों, खंभों आदि पर बैठा कीड़ों मकोड़ों को खाता रहता है, सुबह को इसकी बोली मीठी होती है अन्यथा कर्कश आवाज होती है, ग्रामीण लोग इसे ठाकुर जीभी कहते हैं, इसके घोंसले के पास पंडुक पक्षी भी घोंसला बनाता है, उनकी भी रक्षा भुजंग करता है, अतः इसे 'कोतवाल' भी कहा जाता है।

भुजंगी स्त्री. (तत्.) 1. साँपिन, सर्पिणी 2. काव्य एक समवर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः तीन यगण और लघु-गुरु के योग से 11 वर्ण होते हैं।

भुज पुं. (तत्.) 1. भुजा, बाँह, बाहु, हाथ 2. वृक्ष की शाखा ज्या. किनारे की रेखा।

भुजग पुं. (तत्.) अहि, साँप, सर्प।

भुजगाशन वि. (तत्.) जो साँपों को खाने वाला है पुं. गरुड़ पक्षी, मोर और नेवला आदि।

भुजगेंद्र पुं. (तत्.) सर्पों का राजा, प्रधान, नागराज वासुकि।

भुजदंड पुं. (तत्.) कंधे से कुहनी तक का हाथ का भाग।

भुजपात पुं. (तत्.) भोजपत्र।

भुजपाश पुं. (तत्.) 1. भुजाओं का गले में पड़ा पाश, गलबाँही 2. किसी को गले लगाने की मुद्रा 3. आलिंगन।

भुजबंद पुं. (तद्.) भुजाओं पर पहनने वाला आभूषण।

भुजबंध पुं. (तत्.) भुजाओं में भर लेने का भाव, आलिंगन, बाँहों में ले लेना।

भुजबल पुं. (तत्.) बाँहों की ताकत।

भुजमूल पुं. (तत्.) भुजा का प्रारंभ स्थल, स्कंध।

भुजरी स्त्री. (देश.) 1. समारोह पूर्वक टोकरी में रखकर गेहूँ की बाली नदी में प्रवाहित करने की प्रक्रिया 2. प्रवाहित करने के समय गाए जाने वाले गीत टि. नागपंचमी, हरतीज आदि के समय ऐसे समारोहों का आयोजन होता है।

भुजलता स्त्री. (तत्.) लता जैसी सुंदर लचीली बाँह, टि. कवियों ने अपने वर्णन में भुजलता का भरपूर प्रयोग किया है।

भुजा स्त्री. (तत्.) हस्त, कर, बाहु गणि. ऐसी सरल रेखा जो त्रिभुज, चतुर्भुज आदि के बिंदुओं को मिलाए मुहा. भुजाएँ फड़कना- युद्ध करने के लिए उत्साहित होना; भुजाओं में बाँधना- हृदय से आलिंगन करना; भुजा ठोक कर कहना- ललकारना; भुजा उठाकर कहना- प्रतिज्ञा करना।

भुजाली स्त्री. (तद्.) सिरे पर घुमावदार एक प्रकार का छोटा शस्त्र।

भुजिया वि. (तद्.) 1. भूनकर तैयार किया गया खाद्य पदार्थ 2. भूनकर तैयार की गई बिना पानी की सब्जी 3. ऐसे धान का चावल जो उबाला गया हो, सैला चावल।

भू स्त्री. (तत्.) 1. पृथ्वी, भूमि, धरती, जमीन, स्थान 2. काव्य में एक की संख्या 3. भौंह, भू वि. (समस्त पद के अंत में) से उत्पन्न, से होने वाला उदा. कमल भू अर्थात् ब्रह्म।

भू-अपनति स्त्री. (तत्.) पृथ्वी की सतह में एकाएक उपरिगामी परिवर्तन, भूमि से संबंधित विशेष आंकड़ों के मानों में पर्याप्त लंबी अवधि तक के क्रमिक परिवर्तन।